पाठ 16

1. कैन और उसके वंशज किस लिए जीते थे?

-वे केवल सुख, धन और भौतिक संपत्ति के लिए जीते थे।

2. क्योंकि कैन ने हाबिल को मार डाला, क्या शैतान ने परमेश्वर को वह करने से रोका जो परमेश्वर ने करने का निश्चय किया था?

-नहीं।

-परमेश्वर को वह करने से कोई नहीं रोक सकता जो वह करने का फैसला करता है।

3. क्योंकि कैन ने हाबिल को मार डाला, क्या परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को भूल गया?

-नहीं।

-परमेश्वर अपने वादों को कभी नहीं भूलते।

4. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को एक और पुत्र क्यों दिया जो शेत कहलाता था?

-क्योंकि कैन ने हाबिल को मार डाला, परमेश्वर ने सेठ की लाइन के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने का फैसला किया।

5. आदम और हव्वा की मृत्यु क्यों हुई?

-क्योंकि आदम और हव्वा ने परमेश्वर की अवज्ञा की और शैतान की बात मानी।

6. सभी लोग क्यों मरते हैं?

- हमारे पाप के कारण।

7. पाप के लिए परमेश्वर का दंड क्या है?

-मौत।

8. हनोक अपने बारे में क्या जानता था?

-हनोक जानता था कि वह आदम और हव्वा की संतान के रूप में पैदा हुआ था।

-हनोक जानता था कि उसका जन्म ईडन गार्डन के बाहर हुआ है।

-हनोक जानता था कि वह पाप में पैदा हुआ था।

-हनोक जानता था कि वह मृत्यु में पैदा हुआ था।

9. हनोक परमेश्वर के बारे में क्या जानता था?

-हनोक जानता था कि परमेश्वर पवित्र है।

-हनोक जानता था कि परमेश्वर सभी पापों को मौत की सजा देता है।

-हनोक जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-हनोक का मानना था कि परमेश्वर लोगों को शैतान से बचाने के लिए उद्धारकर्ता को भेजेगा।

10. हनोक के साथ क्या अजीब बात हुई?

-परमेश्वर हनोक को परमेश्वर के साथ रहने के लिए स्वर्ग ले गए।

11. स्वर्ग कैसा है?

-स्वर्ग एक खूबसूरत जगह है जहां कोई दुख या आंसू नहीं है, कोई बीमारी या मौत नहीं है।

12. परमेश्वर हनोक को स्वर्ग क्यों ले गया?

-क्योंकि हनोक ने परमेश्वर की आज्ञा मानी।

-क्योंकि हनोक परमेश्वर के मार्ग में अकेले ही परमेश्वर के पास आया था।

- जब परमेश्वर ने हनोक को स्वर्ग में ले लिया, तब और कई वर्ष बीत गए, और पृथ्वी पर और भी बहुत से लोग पैदा हुए।

-जबकि सेठ और हनोक के वंशज परमेश्वर का अनुसरण करते रहे, अधिकांश अन्य लोगों ने केवल शैतान की बात सुनी।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:1-2

1-जब पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ने लगी, और उनके बेटियां उत्पन्न हुईं,

2-परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि पुरुषों की बेटियाँ सुंदर हैं, और उन्होंने अपने चुने हुए में से किसी को ब्याह लिया।

-परमेश्वर के पुत्र कौन थे?

-वे शेत के वंश के पुत्र थे।

-वे वे पुरुष थे जो ईश्वर में विश्वास करते थे।

-पुरुषों की बेटियां कौन थीं?

-वे कैन के वंश की बेटियाँ थीं।

-ये वो महिलाएं थीं जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करती थीं।

-शेत के वंश के पुत्रों ने कैन के वंश की पुत्रियों से क्या किया?

-शेत के वंश के पुत्रों ने कैन के वंश की पुत्रियों से ब्याह करना आरम्भ किया।

-परमेश्वर में विश्वास करने वाले पुरुषों ने उन महिलाओं से शादी करना शुरू कर दिया जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करती थीं।

-क्या हुआ जब शेत के वंश के पुत्रों ने कैन की पुत्रियों से विवाह करना शुरू किया?

-अधिक से अधिक लोग परमेश्वर की बात नहीं सुनना चाहते थे।

-अधिक से अधिक लोगों ने केवल शैतान की बात सुनी।

-अधिक से अधिक लोगों ने परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण नहीं किया।

-अधिक से अधिक लोगों ने केवल अपने तरीके से अनुसरण किया।

-क्या आपको लगता है कि परमेश्वर खुश थे कि अधिक से अधिक लोग उनकी बात नहीं सुनना चाहते थे?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:3

3-तब यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा न लड़ेगा, क्योंकि वह नश्वर है; उसकी अवस्था एक सौ बीस वर्ष की होगी।"

-परमेश्वर खुश नहीं थे कि अधिक से अधिक लोग उनकी बात नहीं सुनना चाहते थे।

-परमेश्वर क्यों चाहते थे कि लोग उसकी सुनें?

-ताकि लोग नष्ट न हों।

-परमेश्वर ने कहा कि वह केवल 120 साल के लिए लोगों से बात करेंगे।

-अगर लोग अभी भी परमेश्वर के मार्ग का पालन करने से इनकार करते हैं, तो परमेश्वर क्या करेंगे?

-परमेश्वर उन्हें मौत की सजा देंगे।

-परमेश्वर लोगों से कैसे बात कर रहे थे?

-परमेश्वर पवित्र आत्मा लोगों से उनके मन में बात कर रहा था।

-पवित्र आत्मा परमेश्वर लोगों से क्या कह रहा था?

-परमेश्वर पवित्र आत्मा लोगों से कह रहा था कि परमेश्वर की सुनें, न कि शैतान की।

-परमेश्वर पवित्र आत्मा भी लोगों से कह रहा था कि वे परमेश्वर के मार्ग पर चलें, न कि उनके अपने मार्ग पर चलें।

-क्या शैतान भी लोगों के मन की बात करता है?

-हां।

-शैतान लोगों से क्या कहता है?

-शैतान लोगों से कहता है कि वे परमेश्वर की न सुनें।

-शैतान क्यों नहीं चाहता कि लोग परमेश्वर की सुनें?

-शैतान नहीं चाहता कि लोग परमेश्वर की सुनें ताकि वे नष्ट हो जाएं।

-यदि आप अपने मन में परमेश्वर की बात सुनने से इनकार करते हैं, तो परमेश्वर आपको दंड देंगे।

-क्या शैतान की तुलना में ईश्वर की सुनना बेहतर नहीं है?

-भले ही परमेश्वर पवित्र आत्मा लोगों से बात कर रहा था, क्या लोगों ने परमेश्वर की सुनी?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:11

11-अब पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में भ्रष्ट थी और हिंसा से भरी थी।

-यद्यपि परमेश्वर पवित्र आत्मा लोगों से बात कर रहा था, अधिकांश लोगों ने परमेश्वर की सुनने से इनकार कर दिया।

-और पृथ्वी उनकी हिंसा से भर गई।

-नूह के समय के लोग कैसे थे?

-वे स्वार्थी थे।

-वे लालची थे।

-उन्हें दूसरे लोगों से जलन होती थी।

-उन्होंने दूसरे लोगों को बरगलाया।

-उन्होंने दूसरे लोगों से झूठ बोला।

-उन्होंने दूसरे लोगों की बुराई की।

-वे दूसरे लोगों से नफरत करते थे।

-वे दुष्ट थे।

-वे हिंसक थे।

-वे अन्य लोगों के साथ लड़े।

-उन्होंने कई लोगों को मार डाला।

-उन्हें परमेश्वर का रास्ता नहीं चाहिए था।

-वे केवल अपना रास्ता चाहते थे।

-क्या आज के लोग नूह के समय के लोगों की तरह हैं?

-हां।

-क्या आज लोग स्वार्थी और लालची हैं?

-हां।

-क्या आज लोग दूसरे लोगों से झूठ बोलते हैं और उनकी बुराई करते हैं?

-हां।

-क्या आज लोग दूसरे लोगों से लड़ते हैं और उन्हें मार देते हैं?

-हां।

-क्या आज लोग अपना रास्ता खुद चाहते हैं न कि परमेश्वर का रास्ता?

-हां।

-वे लोग पापी पैदा हुए थे क्योंकि वे आदम और हव्वा के वंशज थे।

-आज के लोग भी जन्म से पापी हैं क्योंकि वे आदम और हव्वा के वंशज हैं।

-सभी लोग जन्म से पापी हैं क्योंकि हम आदम और हव्वा के वंशज हैं।

-क्या परमेश्वर ने लोगों के पापों को देखा?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:5 और 12

5 यहोवा ने देखा कि मनुष्य की दुष्टता पृथ्वी पर कितनी बड़ी हो गई है, और उसके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह हर समय केवल बुरा ही होता है।

12-परमेश्वर ने देखा कि पृथ्वी कितनी भ्रष्ट हो गई है, क्योंकि पृथ्वी के सब लोगों ने अपनी चाल-चलन बिगाड़ दी है।

-क्या परमेश्वर ने लोगों के पापों को देखा?

-हाँ, परमेश्वर ने उनके सभी पापों को देखा।

-परमेश्वर हर पाप को देखता है।

-परमेश्वर से कोई भी पाप छिपा नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर हर जगह हैं।

-परमेश्वर सभी पापों को देखता है, और सभी पापों को दंडित करता है।

-परमेश्वर सभी पापों को देखता है, और सभी पापों को मौत की सजा देता है।

-लोगों के सभी पापों को देखकर परमेश्वर ने क्या सोचा?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:6-7

6-यहोवा उदास हुआ, कि उस ने मनुष्य को पृथ्वी पर बनाया, और उसका मन पीड़ा से भर गया,

7-तब यहोवा ने कहा, “मैं मनुष्यों को, जिन्हें मैं ने रचा है, पृथ्वी पर से मिटा दूंगा, क्या मनुष्य क्या क्या पशु, क्या भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, क्योंकि मैं इस बात से दुखी हूं कि मैं उन्हें बनाया है।"

-लोगों के सभी पापों के कारण परमेश्वर बहुत दुखी थे।

-क्योंकि पृथ्वी लोगों के पापों से भरी हुई थी, परमेश्वर ने क्या करने का फैसला किया?

-परमेश्वर ने पृथ्वी पर सभी लोगों को नष्ट करने का फैसला किया।

-क्योंकि पृथ्वी लोगों के पापों से भरी हुई थी, इसलिए परमेश्वर ने पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों को नष्ट करने का फैसला किया।

-क्या आपको लगता है कि परमेश्वर केवल बात कर रहे थे?

-या क्या आपको लगता है कि परमेश्वर वही करेगा जो उसने कहा था कि वह करेगा?

-परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि वे मर जाएंगे और परमेश्वर से अलग हो जाएंगे यदि वे उस फल को खाएंगे जिसे उसने मना किया था।

-क्या परमेश्वर केवल बात कर रहे थे या परमेश्वर ने वही किया जो उसने कहा था कि वह करेगा?

-परमेश्वर ने वही किया जो उसने कहा था कि वह करेगा।

-परमेश्वर ने कैन और हाबिल से कहा कि उन्हें परमेश्वर के अपने तरीके से परमेश्वर के पास आना चाहिए या खारिज कर दिया जाना चाहिए।

-क्या परमेश्वर केवल बात कर रहे थे या परमेश्वर ने वही किया जो उसने कहा था कि वह करेगा?

-परमेश्वर ने वही किया जो उसने कहा था कि वह करेगा।

-परमेश्वर लोगों की तरह नहीं है।

-लोग कहते हैं कि वे कुछ करेंगे, लेकिन फिर नहीं करते।

-परमेश्वर, हालांकि, लोगों की तरह नहीं है।

-परमेश्वर हमेशा वही करता है जो वह कहता है कि वह करेगा।

-परमेश्वर के प्यार और दया के कारण, एक व्यक्ति था जिसे परमेश्वर नष्ट नहीं करने वाले थे।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:8-10

8-परन्तु नूह ने यहोवा की दृष्टि में अनुग्रह पाया।

9-यह नूह का वृत्तांत है। नूह अपने समय के लोगों में धर्मी और निर्दोष था, और वह परमेश्वर के साथ-साथ चलता था।

10-नूह के तीन बेटे थे: शेम, हाम और येपेत।

-परमेश्वर ने नूह को नष्ट न करने का निर्णय क्यों लिया?

- क्या इसलिए कि नूह ने पाप नहीं किया था?

-नहीं।

-नूह सभी लोगों की तरह ही एक पापी पैदा हुआ था।

-नूह सभी लोगों की तरह ही शैतान का गुलाम पैदा हुआ था।

-परमेश्वर ने नूह को नष्ट न करने का निर्णय क्यों लिया?

-क्योंकि नूह ने शैतान की नहीं सुनी।

-क्योंकि नूह ने परमेश्वर की सुनी।

-क्योंकि नूह ने अपने मार्ग का अनुसरण नहीं किया।

-क्योंकि नूह ने केवल परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण किया।

-क्योंकि नूह उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा कर रहा था।

-परमेश्वर ने नूह को बचाने का फैसला क्यों किया?

-क्योंकि नूह जानता था कि उसका जन्म पाप में हुआ है।

-क्योंकि नूह जानता था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-क्योंकि नूह जानता था कि परमेश्वर सभी पापों को मौत की सजा देता है।

-क्योंकि नूह जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-क्योंकि नूह जानता था कि परमेश्वर उसे उसके पापों से बचाने के लिए उद्धारकर्ता को भेजेगा।

-परमेश्वर की कृपा के कारण, परमेश्वर ने नूह को नष्ट नहीं करने का फैसला किया।

-अनुग्रह क्या है?

-यहाँ एक दृष्टांत है:

-एक चोर ने अपने पड़ोसी से कई बार चोरी की।

-एक दिन चोर बाढ़ में फंसी नदी में फंस गया।

-चोर लगभग नदी में डूब रहा था।

-लेकिन उसके पड़ोसी ने चोर को देखा, उसे नदी से खींचकर छुड़ा लिया।

-भले ही चोर कई बार चोरी कर चुका हो, लेकिन पड़ोसी ने उसे छुड़ा लिया।

- चोर भले ही डूबने लायक था, लेकिन पड़ोसी ने उसे बचा लिया।

-यह कृपा है।

-इस तरह परमेश्वर हमें बचाता है अगर हम केवल उस पर विश्वास करते हैं।

-क्योंकि नूह ने परमेश्वर में विश्वास किया, और परमेश्वर ने नूह को बचाने का फैसला किया, परमेश्वर ने नूह को एक आदेश दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:13-14

13 तब परमेश्वर ने नूह से कहा, मैं सब लोगोंका अन्त कर डालूंगा, क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है। मैं निश्चय उन दोनों को और पृथ्वी को नष्ट करने वाला हूं।

14 सो सरू की लकड़ी का एक सन्दूक बनाओ; उस में कोठरियां बनाओ, और उस पर भीतर और बाहर का लोटा लगाओ।"

-परमेश्वर ने नूह को क्या करने की आज्ञा दी?

-परमेश्वर ने नूह को नाव बनाने की आज्ञा दी।

-परमेश्वर ने नूह को नाव बनाने की आज्ञा क्यों दी?

-क्योंकि परमेश्वर पृथ्वी पर सारे जीवन को नष्ट करने के लिए एक जलप्रलय भेजने जा रहा था।

-परमेश्वर ने नूह को नाव बनाने के तरीके के बारे में कई आज्ञाएँ दीं।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:15-21

15-परमेश्वर ने नूह से कहा: "तुम इसे इस प्रकार बनाना चाहते हो: सन्दूक 450 फीट लंबा, 75 फीट चौड़ा और 45 फीट ऊंचा हो।

16-इसके लिए एक छत बनाओ और ऊपर से 18 इंच के भीतर सन्दूक को खत्म करो। सन्दूक के किनारे में एक दरवाजा रखो और निचले, मध्य और ऊपरी डेक बनाओ।

17-मैं पृथ्वी पर जलप्रलय लाने पर हूं, कि आकाश के नीचे के सब प्राणियोंको, और जितने प्राणी उस में जीवन का प्राण है, उन सभोंको नाश कर डालूंगा। पृथ्वी पर सब कुछ नष्ट हो जाएगा।

18 परन्तु मैं अपक्की वाचा तेरे संग बान्धूंगा, और तू सन्दूक में प्रवेश करेगा;

19 तू सब जीवित प्राणियों में से दो नर और मादा को सन्दूक में लाना, कि वे अपके साथ जीवित रहें।

20 सब प्रकार के पक्षी, और सब प्रकार के पशु, और भूमि पर रेंगनेवाले सब जन्तु में से दो तुम्हारे पास जीवित रहने के लिथे आएंगे।

21 और खाने के लिये सब प्रकार का भोजन लेकर अपके और उनके लिथे भोजन के लिये भण्डार रखना।"

-परमेश्वर ने नूह को सही लंबाई में नाव बनाने का आदेश दिया।

-परमेश्वर ने नूह को नाव को ठीक-ठीक चौड़ाई में बनाने का आदेश दिया।

-परमेश्वर ने नूह को सही ऊंचाई पर नाव बनाने का आदेश दिया।

-क्या परमेश्वर चाहता था कि नूह नूह के मार्ग के अनुसार नाव बनाए?

-नहीं।

-परमेश्वर नहीं चाहता था कि नूह नूह के मार्ग के अनुसार नाव बनाए।

-परमेश्वर कैसे चाहता था कि नूह नाव का निर्माण करे?

-ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने आज्ञा दी थी।

-परमेश्वर चाहते थे कि नूह नाव को ठीक वैसे ही बनाए जैसे परमेश्वर ने आज्ञा दी थी।

-परमेश्वर चाहता था कि नूह केवल परमेश्वर के मार्ग के अनुसार नाव का निर्माण करे।

-आदम और हव्वा के कपड़े केवल परमेश्वर के अनुसार ही बनाने थे।

-कैन और हाबिल का बलिदान केवल परमेश्वर के मार्ग के अनुसार ही किया जाना था।

-नूह की नाव को भी केवल परमेश्वर के मार्ग के अनुसार ही बनाना था।

-परमेश्वर ने नूह को कितनी नावें बनाने की आज्ञा दी थी?

-केवल एक।

-केवल एक ही नाव थी जिसमें नूह बच जाएगा।

-और कोई नाव नहीं थी जिसमें नूह बचाया जा सके।

-कितने दरवाजों को परमेश्वर ने नूह को नाव में बनाने की आज्ञा दी?

-केवल एक।

-केवल एक ही द्वार था जिसमें नूह प्रवेश करेगा और उद्धार पाएगा।

-और कोई द्वार नहीं था जिसमें नूह प्रवेश करे और उद्धार पाए।

-क्या आपको लगता है कि नूह ने परमेश्वर की बात मानी?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 6:22

22-नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी।

-नूह ने परमेश्वर को माना।

-नूह का मानना था कि ईश्वर झूठ नहीं बोलता।

-नूह का मानना था कि जैसे परमेश्वर ने कहा था, वैसे ही परमेश्वर बाढ़ भेज देंगे।

-इसलिए, नूह ने नाव को ठीक वैसे ही बनाया जैसे परमेश्वर ने कहा था।

-हालांकि नूह ने पहले कभी बारिश नहीं देखी थी, नूह ने क्या विश्वास किया?

-कि परमेश्वर एक बाढ़ भेजेगा।

-भले ही पृथ्वी पर किसी ने पहले कभी बारिश नहीं देखी थी, नूह ने क्या विश्वास किया?

-कि परमेश्वर एक बाढ़ भेजेगा।

-नाव बनाते समय नूह ने क्या किया?

-जब नूह नाव बना रहा था, उसने लोगों से कहा कि वे परमेश्वर की सुनें।

-जैसे ही नूह नाव का निर्माण कर रहा था, उसने लोगों से कहा कि वे परमेश्वर पर विश्वास करें।

-जब नूह नाव का निर्माण कर रहा था, उसने लोगों से कहा कि परमेश्वर पृथ्वी को नष्ट करने के लिए जलप्रलय भेजने जा रहा है।

-जैसे मैं आपको परमेश्वर के बारे में बता रहा हूं, वैसे ही नूह ने भी लोगों को परमेश्वर के बारे में बताया।

-क्या आपको लगता है कि लोगों ने नूह की बात सुनी?

-हम अगले पाठ में पता लगाएंगे।